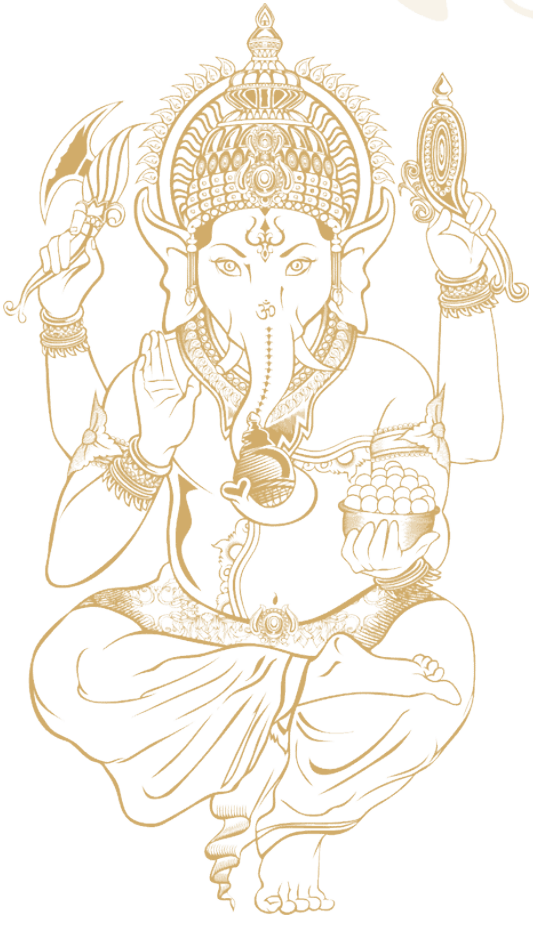

Mr.

05 Jun 1983

06:30 PM

Dehri on Sohne

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119861101**

तिथि 05/06/1983 **समय** 18:30:00 **वार** रविवार **स्थान** Dehri on Sohne **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:37:14
अक्षांश 24:55:00 उत्तर **रेखांश** 84:11:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:06:44 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	11:30:18 घं
वेलान्तर	00:01:42 घं
सूर्योदय	05:03:27 घं
सूर्यास्त	18:39:58 घं
चैत्रादि संवत	2040
शक संवत	1905
मास	ज्येष्ठ
पक्ष	कृष्ण
तिथि	10
नक्षत्र	उ०भाद्रपद
योग	आयुष्मान
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	थ-थानसिंह
पाया(रा.-न.)	रजत-लौह
होरा	मंगल
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

शनि 10वर्ष 2मा 13दि

शुक्र

18/08/2017
18/08/2037

शुक्र	18/12/2020
सूर्य	18/12/2021
चन्द्र	19/08/2023
मंगल	18/10/2024
राहु	18/10/2027
गुरु	18/06/2030
शनि	18/08/2033
बुध	18/06/2036
केतु	18/08/2037

योगिनी

भद्रिका 2वर्ष 8मा 6दि

उल्का

10/02/2022
11/02/2028

उल्का	10/02/2023
सिद्धा	11/04/2024
संकटा	11/08/2025
मंगला	11/10/2025
पिंगला	10/02/2026
धान्या	12/08/2026
भ्रामरी	12/04/2027
भद्रिका	11/02/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			19:21:57	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			20:41:03	वृष	रोहिणी	4	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि	1.64	अमात्य	पितृ	साधक
चंद्र			09:30:23	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	सम राशि	1.36	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	20:08:18	वृष	रोहिणी	4	चंद्र	केतु	सम राशि	1.36	भ्रातृ	भ्रातृ	साधक
बुध			27:13:37	मेष	कृतिका	1	सूर्य	सूर्य	सम राशि	0.79	आत्मा	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु	व		11:21:03	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	चंद्र	मित्र राशि	1.11	मातृ	धन	जन्म
शुक्र			05:39:10	कर्क	पुष्य	1	शनि	बुध	शत्रु राशि	1.00	ज्ञाति	कलत्र	जन्म
शनि	व		04:38:36	तुला	चित्रा	4	मंगल	शुक्र	उच्च राशि	1.25	कलत्र	आयु	वध
राहु	व		01:31:34	मिथु	मृगशिरा	3	मंगल	बुध	उच्च राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		01:31:34	धनु	मूल	1	केतु	शुक्र	उच्च राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

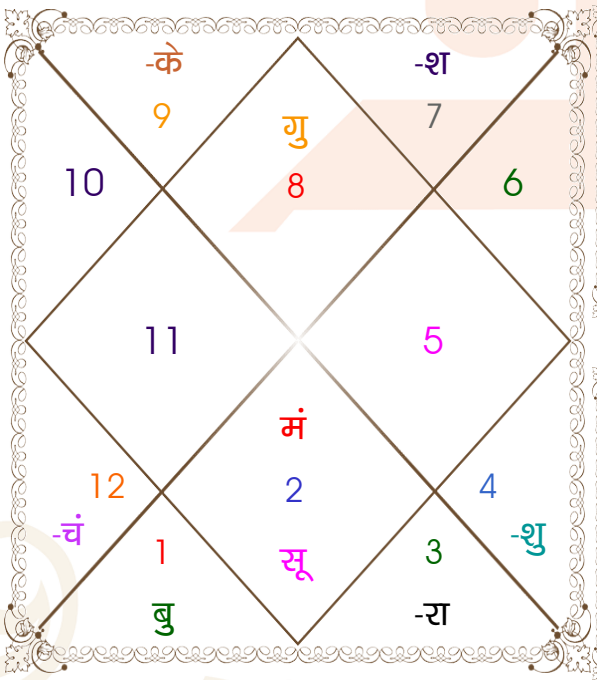

चन्द्र कुंडली

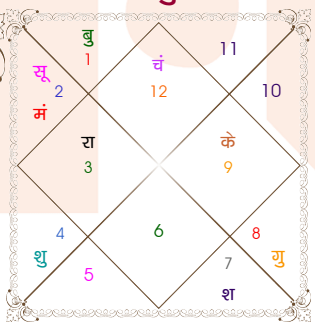

नवमांश कुंडली

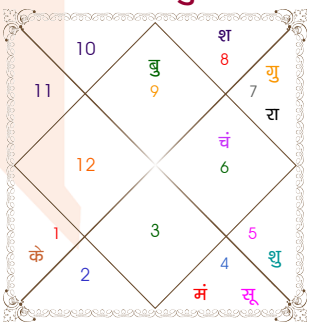

सर्वाष्टकवर्ग

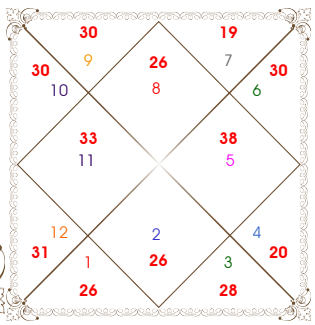

दशमांश कुंडली

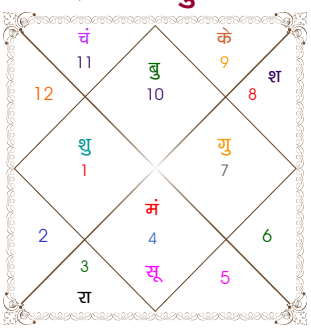

नक्षत्रफल

आप उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, नाड़ी मध्य, वर्ग सर्प, गण मनुष्य तथा गो योनि होगी। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "थ" या "था" अक्षर से होगा।

आप अपने कुल तथा परिवार के मध्य श्रेष्ठ रहेंगे तथा सभी पारिवारिक जन आपको यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप मध्यम शारीरिक कद के पुरूष होंगे तथा सत्कार्यों को करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। आपके इन शुभ कर्मों से अन्य जन भी समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप धनाढ्य पुरूष होंगे एवं विपुल धन सम्पत्ति से युक्त रहकर जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। यदा कदा आप में अभिमानी प्रवृति भी जागृत होगी एवं अन्य लोगों के समक्ष इसका प्रदर्शन करेंगे जिससे कई लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक कीर्तिशाली पुरूष होंगे तथा समाज में दूर दूर तक यश प्राप्त करेंगे।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता।
यस्तोत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराभाद्रपद में उत्पन्न जातक कुल में श्रेष्ठ, मध्यम देह वाला, शुभकर्मों को करने वाला, धनाढ्य, अभिमानी और कीर्तिशाली होता है।

आप एक सत्वगुणी पुरूष होंगे एवं इन गुणों का आप जीवन में प्रयत्नपूर्वक अनुपालन करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। आपके अर्न्तमन में त्याग का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा समयानुसार परिवारिक तथा सामाजिक जनों के मध्य आप इसी प्रवृति का भी पालन करते रहेंगे। धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके आप एक विद्वान के रूप में भी ख्याति प्राप्त कर सकेंगे।

चाहिर्बुध्न्यजमानवो मृदुगुणस्त्यागी धनी पंडितः।
जातक परिजातः

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक मृदुगुणों से सम्पन्न अर्थात् सात्विक, धनी, त्यागी और पंडित होता है।

आप एक उच्च कोटि के वक्ता होंगे तथा अपने ओजस्वी वक्तव्यों से समाज के सभी वर्गों को प्रभावित करने में सर्वदा समर्थ रहेंगे तथा जीवन में पूर्ण रूप से सुखसंसाधनों से युक्त रहकर प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगे। आपका परिवार अत्यन्त ही विस्तृत रहेगा तथा पुत्र पौत्रादि के सुख को भी आप प्राप्त करने में सौभाग्यशाली रहेंगे। शत्रुवर्ग आपसे नित्य पराजित तथा भयभीत रहेगा एवं आपका विरोध करने में सर्वथा असमर्थ रहेगा। इसके साथ ही

आप धार्मिकता की भावना से भी युक्त रहेंगे एवं समस्त धार्मिक प्रवृतियों का यत्नपूर्वक आचरण करते रहेंगे।

वक्ता सुखी प्रजावान जितशत्रुधार्मिको द्वितीयासु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र का जातक वक्ता, जीवन में सुखी, बहुत पुत्र एवं पौत्रों से युक्त, शत्रुओं को जीतने वाला तथा धार्मिक आचरण से सम्पन्न होता है।

समाज में आप एक गौरवशाली व्यक्ति माने जाएंगे तथा अपने सत्कार्यों एवं गुणों से गौरव प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के विषय में भी आपका ज्ञान विस्तृत रहेगा एवं समाज में एक श्रद्धेय तथा आदरणीय पुरूष के रूप में आपका नित्य आदर होता रहेगा। आप एक साहसी व्यक्ति भी होंगे तथा साहसिक एवं शौर्योचित कार्यों के प्रति आपकी रूचि रहेगी एवं इनको सम्पन्न करने में आप हमेशा उत्सुक तथा तत्पर रहेंगे।

गौरः ससत्वो धर्मज्ञः शत्रुघाती परामरः।
उत्तराभाद्रपदजो नरः साहिसको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य गौरवर्ण, धर्म का ज्ञाता, शत्रुओं का नाश करने वाला, देवताओं के तुल्य, सत्वगुण प्रधान एवं साहसी होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शारीरिक रूप से सुन्दर एवं आकर्षक रहेंगे तथा आपका मस्तक विशाल एवं नासिका ऊँची रहेगी। आपकी आखें भी सुन्दर होंगी एवं समस्त शरीर के अंग पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे। आपका कटिभाग क्षीण रहेगा। आप चित्रकारी में विशेष रूचिशील रहेंगे तथा परिश्रमपूर्वक इस क्षेत्र में सफलता तथा ख्याति अर्जित करेंगे। शत्रुवर्ग को नष्ट करने में आप हमेशा समर्थ रहेंगे तथा वे सभी आपसे भयाक्रान्त रहेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा कई शास्त्रों का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा। साथ ही संगीत में भी आपकी नैसर्गिक रूचि रहेगी तथा इसका आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। आप एक धर्म निष्ठ व्यक्ति होंगे एवं श्रद्धापूर्वक धार्मिक आचरण सम्पन्न करते रहेंगे। स्त्री वर्ग में आप लोकप्रिय

रहेंगे तथा उनसे पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग अर्जित करते रहेंगे। साथ कई महिलाओं से आपके मित्रतापूर्ण मधुर संबंध भी रहेंगे। आप अपने सम्भाषण में हमेशा मधुर एवं प्रिय वाणी का उपयोग करेंगे जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे। आप अपने जीवन काल में आवश्यक सुखसंसाधनों से सम्पन्न रहेंगे एवं आनन्दपूर्वक जीवन में इनका उपयोग भी करेंगे। आप में क्रोध का भाव न्यून ही होगा तथा यदा कदा ही आप इसका प्रदर्शन करेंगे। आप राजकीय सेवा में भी नियुक्त रहेंगे तथा खान आदि से निकाले गए पदार्थों से भी अपनी आजीविकार्जन करेंगे। साथ ही इससे आप को पर्याप्त मात्रा में लाभ की भी प्राप्ति होती रहेगी। परन्तु स्त्री से आप पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा अपने समस्त मुख्य सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे। समाज में अन्य लोगों से आपके प्रिय तथा मधुर संबंध रहेंगे तथा सभी आपके मृदु स्वभाव से प्रभावित रहेंगे। समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करने में भी आपकी हार्दिक प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी रहेगा एवं समयानुसार इस प्रवृति का आप पालन भी करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप जलोत्पन्न पदार्थो यथा शंख, मोती आदि अन्य रत्नों से नित्य लाभान्वित होते रहेंगे तथा इनसे युक्त भी रहेंगे। साथ ही जीवन में किसी अन्य व्यक्ति, संबंधी या मित्र की सम्पत्ति को आप प्राप्त करेंगे। नारी वस्त्रों के प्रति आपके मन में विशेष आसक्ति भी रहेगी। इसके साथ ही आप मध्यम शारीरिक कद के पुरूष होंगे।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप दिन में कई बार जल पीने की इच्छा प्रदर्शित करेंगे। आप अपनी पत्नी पर पूर्ण विश्वास करेंगे तथा उससे हमेशा प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आपका गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। आप विद्वता के गुण से युक्त रहेंगे तथा अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर उसका उपकार स्वीकार करेंगे तथा उनका हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे। आपकी इस कृतज्ञता की भावना तथा अन्य सद्गुणों से सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आप एक गणमान्य पुरूष होंगे तथा आपके अधिकांश कार्य अल्प परिश्रम द्वारा भाग्यबल से ही सम्पन्न होगे।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।

फलदीपिका

आप अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रखने में सफल रहेंगे तथा हमेशा संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही आप एक चालाक एवं बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक कार्यों को चालाकी तथा बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। जल क्रीड़ा में आपकी प्रबल आसक्ति रहेगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसमें विहार करके अत्यन्त ही सन्तुष्टि एवं प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आपका अधिकांश समय उदरपोषण के कार्यों में ही व्यतीत होगा साथ ही कभी कभी लाभ मार्ग भी अवरूद्ध होंगे फलतः आपको आर्थिक कष्ट की अनुभूति भी हो सकती हैं। आपकी शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी एवं इससे आपके सौन्दर्य तथा व्यक्तित्व में आकर्षण की वृद्धि होती रहेगी। पिता से आपको पूर्ण धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा इसका आप सुखपूर्वक जीवन में उपयोग कर सकेंगे। आप एक साहसी पुरूष भी होंगे तथा नित्य साहसिक कार्यों को करने के लिए उत्सुक तथा तत्पर रहेंगे। आपका स्वभाव सन्तोषी होगा तथा जितनी भी आपको उपलब्धि हो रही हो उसी पर सन्तुष्ट रहेंगे एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप गम्भीर प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा वीरता के गुणों से सर्वदा सुशोभित रहेंगे। समाज में आप एक गणमान्य एवं प्रतिष्ठित पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपको श्रद्धेय तथा पूजनीय समझेंगे। साथ ही आप में कंजूसी का भाव भी रहेगा एवं धन संचय के प्रति आपकी विशेष रुचि रहेगी। आप अपने परिवार या कुल में सम्माननीय तथा प्रिय रहेंगे एवं सभी कौटुम्बिक जन आपको यथायोग्य स्नेह तथा आदर प्रदान करेंगे। आपको सेवा करने का कार्य रूचिकर लगेगा। अतः प्रायः आप इन कार्यों में तत्पर रहेंगे। आपकी चलने की गति भी तीव्र रहेगी तथा तेज चलना आपको रूचिकर लगेगा। इसके अतिरिक्त आपका आचरण उत्तम रहेगा एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।

मानसागरी

आप एक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा उत्तम कोटि के विद्वानों के लक्षणों से भी सुशोभित रहेंगे। साथ ही समाज में महिलाओं से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण आदर तथा सम्मान अर्जित करेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा। परन्तु आप में अभिमान का भाव भी रहेगा अतः समय समय पर आप इसका प्रदर्शन करते रहेंगे। इससे अन्य लोग आपसे असन्तुष्ट भी रहेंगे। आपके मन में दया एवं करूणा की भावना भी सर्वदा विद्यमान रहेगी एवं अवसरानुकूल इसका प्रदर्शन भी आप करते रहेंगे। साथ ही आप शारीरिक रूप से पूर्ण बलशाली होंगे एवं अपने अधिकाँश कार्यों को अपने बल पर ही सम्पन्न करेंगे। इसके साथ ही कई प्रकार के कार्यों तथा कलाओं को सम्पन्न करने में भी आप निपुण रहेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी एवं परिवार के अतिरिक्त अन्य कई लोगों को भी आप सुख प्रदान करेंगे।

आप समाज में हमेशा सम्मानित रहेंगे तथा धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर इसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। आपकी आखें विशाल होंगी एवं निशानेबाजी की कला में आप अत्यन्त ही दक्ष रहेंगे तथा इस क्षेत्र में विशेष योग्यता एवं ख्याति अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त नगर के लोगों पर आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा एवं आपकी आज्ञा पालन के लिए वे सर्वदा तत्पर रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गौ योनि में पैदा होने के कारण आप स्त्रीवर्ग के मध्य अत्यन्त ही प्रिय तथा आदरणीय रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। आप एक उत्साही पुरूष होंगे तथा हमेशा उत्साह की भावना से सुसम्पन्न रहेंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को सोत्साह सम्पन्न करेंगे। साथ ही आप बोलने में अत्यन्त ही चतुर होंगे तथा अपनी वाक्चतुरता से सबको प्रभावित करने में सफल रहेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी

वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलकारक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोनति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पतिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत चन्दन, पीत वस्त्र, चने की दाल तथा हल्दी आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी तथा अशुभ फलों के प्रभाव नष्ट होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।